**Vidhyayana - ISSN 2454-8596**

An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal

**www.vidhyayanaejournal.org**

**Indexed in: ROAD & Google Scholar**

# हिंदी काव्य मे नारी की बदलती स्थिति

**डी. शंकर**

रीसर्च स्कोलर,

हिंदी, सुरेन्द्रनगर यूनिवर्सिटी, वधवान

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

**अमूर्त**

वैदिक काल में नारी को पूजा करने, यज्ञ करने और शिक्षा ग्रहण करने जैसे अनेक अधिकार प्राप्त थे। परंतु आदिकाल तक आते - आते नारी पुरुष की संपत्ति बन कर रह गई। आदिकालीन काव्य से स्पष्ट होता है कि भले ही नारी को स्वयं वर चुनने का अधिकार प्राप्त हो परंतु नारी की स्थिति समाज में इस प्रकार की थी जैसे कोई मदारी कठपुतली को अपनी उंगलियों पर नचाता है । नारी एक ओर जहां नाथों की निंदा का पात्र बनी वही सिद्धों ने उसे केवल वासनात्मक दृष्टि से देखा।भक्ति काल में कवियों ने नारी की निंदा और प्रशंसा दोनों की है । यह स्पष्ट करने हतु हिंदी विषय के शोध छात्र होने के नाते हिंदी काव्य मे नारी की बदलती स्थिति का जायचा करने एवं इस अनुसंधान के माध्यम से नारी के प्रति आदर जगाने हेतु प्रस्तुत शोध पत्र तैयार किया गया है ।

**मुख्य शब्द:** हिंदी काव्य, नारी, नारी की बदलती स्थिति

**प्रस्तावना**

नारी की मन की संरचना, पुरुष से अलग होती हैं। नारी में,क्षमा,वात्सल्य,दया और सहनशीलता आदि गुण विद्यमान है । माँ समर्पण का सात्विक जीवन, आत्म संतोषी होती है ।नारी सरल, संतुष्ट, समर्पण मांगती है। नारी को पुरुष का अर्जन प्रिय होता है, विसर्जन नहीं।

असमर्थ पराजित, दुर्बल पुत्र को मा का आँचल धैर्य, सांत्वना जैसा होता हैं।

नारी को, जीवन मे जूझता पुरुष कमनीय लगता है।

नारी को असमर्थ, पराजित और दुर्बल पुरुष प्रिय नहीं लगता ।नारी को समृद्धि, वस्त्र, आभूषण और सता प्रिय होती है। नारी की स्थिति हमेशा से एक जैसी नहीं रही,भारतीय संस्कृति में विद्यमान धार्मिक विषमताएं, अंधविश्वासों और निरक्षरता के कारण नारी युगों युगों से उपेक्षित होती रही है। वैदिक काल में नारी को पूजा करने, यज्ञ करने और शिक्षा ग्रहण करने जैसे अनेक अधिकार प्राप्त थे।साहित्य समाज का दर्पण और दीपक होता है ' यह उक्ति जग विख्यात है। साहित्यकार युगीन समाज से प्रभावित होता है और वह साहित्य के बल पर तत्कालीन समाज को भी प्रभावित करता

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

है। नारी भारतीय सभ्यता और साहित्य का केंद्र बिंदु रही है।

**जिस घर में होता नहीं, नारी का सम्मान।**

**देवी पूजन व्यर्थ है, व्यर्थ वहाँ सब दान।।**

हिंदी काव्य में, वैदिक काल में नारी को पूजा करने, यज्ञ करने और शिक्षा ग्रहण करने जैसे अनेक अधिकार प्राप्त थे। परंतु आदिकाल तक आते - आते नारी पुरुष की संपत्ति बन कर रह गई। आदिकालीन काव्य से स्पष्ट होता है कि भले ही नारी को स्वयं वर चुनने का अधिकार प्राप्त हो परंतु नारी की स्थिति समाज में इस प्रकार की थी जैसे कोई मदारी कठपुतली को अपनी उंगलियों पर नचाता है उसी प्रकार पुरुष भी जिस प्रकार चाहे नारी का शोषण कर सकता था। नारी एक ओर जहां नाथों की निंदा का पात्र बनी वही सिद्धों ने उसे केवल वासनात्मक दृष्टि से देखा।भक्ति काल में कवियों ने नारी की निंदा और प्रशंसा दोनों की है । संयमशील और मर्यादित नारी को ईश्वरीय अवतार मानते हुए उसको पूजनीय बताया है वहीं भक्ति में बाधा उत्पन्न करने वाली और वासना में लिप्त नारी को संसार के लिए त्याज्य मानते हैं। रामचरितमानस के आदर्श नारी पात्र आज भी संपूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत है। यशोदा के माध्यम से नारी के माता रूप का जो चित्र सूरदास ने खींचा है वह अपने आप में अनूठा है। रीतिकाल में समाज का प्रत्येक वर्ग विलासिता के रंग में रंगा हुआ था समाज में नर और नारी दोनों का नैतिक पतन हो चुका था। तत्कालीन कवि भी झूठी प्रशंसा और धन प्राप्त करने की ओर उन्मुख थे। आधुनिक काल तक आते - आते नारी तो केवल पुरुष की पैर की जूती बन कर रह गई। सामाजिक जागृति के कारण नारी की स्थिति में धीरे धीरे बदलाव आने लगा। आधुनिक काल में सती प्रथा जैसी कुछ विसंगतियां खत्म हुई तो कन्या - भ्रूण हत्या और बलात्कार जैसी नारी से संबंधित समस्याओं ने जन्म ले लिया।

**पायल ही बेड़ी बनी, कैसी है तकदीर।**

**नारी का क़िरदार बस, फ्रेम जड़ी तस्वीर।।**

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भारतीय समाज की सोच पितृसत्तात्मक होने के कारण नारी पुरुष की उपेक्षा, घृणा, तिरस्कार एवं शोषण का शिकार होती है। परंतु समाज द्वारा खींची गई विभिन्न लक्ष्मण रेखाओं के बावजूद नारी अपनी अस्मिता, स्वाभिमान एवं स्वतंत्र सता के लिए संघर्षरत रही है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता : ।

यत्रैतास्तु न पूज्यंते सर्वास्त्राफला : क्रिया : ।। 1

अर्थात जिस कुल में नारी की पूजा या सम्मान होता है उस कुल में देवताओं का निवास होता है और जिस कुल में नारी का तिरस्कार होता है उस कुल में की गई सभी क्रियाएं निष्फल होती हैं।

सता थी और न ही कोई विशेष अधिकार।भले ही विद्यापति ने ' पदावली ' में राधा कृष्ण की महिमा का गुणगान किया है। परंतु राधा के बौद्धिक सौंदर्य का वर्णन कम और शारीरिक सौंदर्य का वर्णन अधिक किया है। विद्यापति भी नारी को केवल प्रेयसी रूप में देखते हैं।रासो ग्रंथों में भी नारी को भोग विलास की वस्तु एवं पुरुष की संपत्ति के रूप में दर्शाया गया है। ' पृथ्वीराज रासो ' में बहु - पत्नी प्रथा एवं राजकुमारी का अपहरण कर उनसे जबरन विवाह करने की कथाएं देखने को मिलते हैं।

तुलसीदास ने सीता, अनुसूया, कौशल्या, सुमित्रा, मंदोदरी, तारा और अहिल्या आदि नारी पात्रों के माध्यम से युगीन नारी को पतिव्रता, त्यागमयी, सहनशील एवं कर्तव्यपरायण आदि गुणों को धारण करने की शिक्षा दी है। संतो के समान कृष्ण काव्य के कवि भी अपनी और पराई नारी से दूर रहने का उपदेश देते हैं। उनके अनुसार नारी के संबंध मिथ्या, माया के मूल और भक्ति में बाधक है।

सूरदास ने काव्य में यशोदा को वात्सल्य की प्रतिमूर्ति एवं राधा को एक निष्ठ प्रेयसी के रूप में उभरा है।समाज के प्रति विद्रोह एवं क्रांति की भावना के प्रथम स्वर मीरा बाई के काव्य में मुखरित होते हैं।

एक नहीं दो, दो मात्राए, नर से भारी नारी। गुप्त जी ने नारी पर लगा बंधनो का विरोध करते है। ये विडंबना ही है की, पुरुष उस पर विश्वास नहीं करता। पूरूष के दोष तो क्षम्य है, परंतु नारी का एक

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भी दोष क्षम्य नहीं होता और अत्याचार व शैपण का शिकार होती है।

मध्ययुगीन समाज में नारी की स्थिति दयनीय हो गई थी। शासक वर्ग भोग विलास में डूबे रहते थे। उनके हरम दासियों से भरे रहते थे। युगीन कवि आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने एवं उनकी कामवासना को उत्तेजित करने के लिए नारी के शारीरिक सौंदर्य का अतिश्योक्ति वर्णन करते थे। रीति कवियों की दृष्टि में नारी केवल उपभोग्या थी। उनकी समझ से वन, नगर और पुर की स्त्रियों का सर्वसामान्य गुण यही था कि वह देखने मात्र से ही विवेक हर लेती थी, उनकी छायाग्राहिणी छवि से कोई पुरुष बच ही नहीं सकता था। 7 रामचंद्रिका ' में केशवदास ने नैतिकता एवं मर्यादा का पूर्ण पालन किया है।इसमें कवि ने किसी भी स्थान पर अश्लीलता का समावेश नहीं किया। चिंतामणि, कुलपति मिश्र, देव, रसलीन आदि कवियों ने नारी को ' विलासिता के सामग्री ' समझते हुए उसके मांसल पक्ष के श्रृंगारिक चित्र ही अपने काव्य में उकेरे हैं। मंडन ने ' नख - शिख ' रचना में नारी के अंगों, आभूषणों और वस्त्रों का श्रृंगारिक वर्णन किया।

आधुनिक मीरा' थी वो महादेवी वर्मा हिंदी छायावाद के चार स्तंभों में से एक मानी जाती हैं| सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'. सुमित्रानंदन पंत और जयशंकर प्रसाद जिन्होंने नारी जीवन के संघर्ष को काव्य रूप प्रदान किया।

गुप्त जी की नारी भावना चित्रकूट में सीता अपनी कुटिया को ही राजमहल मानती है औश्र पति के साथ अपने आप को बडी सौभाग्यवती समझती है। इस प्रकार गुपत जी ने सीता को आदर्श नारी के रूप में चित्रित किया है। गुप्त जी नारी का स्वाभिमानी रूप भी चित्रित किया है।

उर्मिला को अपने रूप का दर्प है। वह कामदेव को फटकार लगाती है और उसे अपने सिन्दूर बिन्दु की ओर देखने की चुनौती देती हुई है कि यह शंकर जी के अग्नि नेत्र की भाँति उसे भस्म कर देगा। 'यशोधरा' में भी गौतम बुद्ध जब वन से लौटते है तो वे उनसे मिलने नहीं जाती। बुद्ध स्वयं उनसे मिलने जाते है। गुप्त जी कहते हैं कि

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

**मानिनी मान तजो लो रही तुम्हारी बान।**

**दानिनी आए स्वयं द्वार पर यह भव तत्र भवान्।।**

गुप्त जी ने नारी को गौरवपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने अपने काव्य में उसके गौरवपूर्ण रूपों को उकेरा है। गुप्त जी की नारी भावना उदात्त भाव की है। वे नारी को आदर्श रूप में स्थापित करते है।

सामाजिक दृष्टि से मतिराम ने ' रसराज ' ग्रंथ में नायिका भेद कर तीन प्रकार से नायिकाओं का वर्णन किया। श्रृंगारिक कवियों के अनुसार पतिव्रत धर्म का पालन और पति मन को लुभाने वाली नायिका ही सर्वश्रेष्ठ है।रीतिकालीन काव्य में नारी की स्थिति ' विलासिनी प्रेमिका ' के रूप में उभर कर सामने आती है।

महादेवी वर्मा के काव्य में विरह वेदना का वर्णन मिलता है। सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने पुरुष द्वारा प्रताड़ित नारी को मुक्त करने का आह्वान किया है। ' नारी तुम केवल श्रद्धा हो ' कहने वाले कवि जयशंकर प्रसाद ने नारी के प्रति आस्था प्रकट करते हुए उसे कला, नृत्य, साहित्य और संगीत की प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया है।प्रगतिवादी काव्य में नारी की स्थिति में बदलाव आया।अब तक कवियों द्वारा नारी के रूप को जहां कोरी कल्पना और आदर्शवाद के धागों द्वारा बुना गया था उसे केदारनाथ, नागार्जुन, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और त्रिलोचन जैसे कवियों ने यथार्थ के धरातल पर उतारा।स्त्री के समक्ष आने वाली समाजिक और आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया। रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपनी ' नई नारी ' में आधुनिक नारी भावना संबंधी परिवर्तन जिसमें नारी ने घुंघट को उलट दिया है, पर्दे को फाड़ फेंका है, प्राचीरों को ध्वस्त तथा बंधनों को चूर - चूर कर दिया और बड़ा ही सजीव चित्र उपस्थित किया है। यौन संबंधी विषयों और मानसिक कुंठाओं के कारण नई कविता अश्लीलता के पथ पर चलने लगी। भोग और वासना को नए कवियों ने सर्वोपरि समझते हुए नारी का चित्रण किया।अनामिका, रमणिका गुप्ता, नीलेश रघुवंशी, इंदु जैन, गगन गिल, मैत्री पुष्पा जैसी अधिकांश समकालीन कवयित्रियों ने मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न झेलती नारी का मार्मिक और हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

विदेशियों के आगमन से स्त्रियों की स्थिति में जबर्दस्त गिरावट आयी। अशिक्षा और रूढीयी जकड़ती गई, घर की चाहरी दीवारी में कैद होती गई और नारी एक अबला, रमणी और भोग्या बनकर रह गई। आर्य समाज आदि समाज - सेवी संस्थाओं ने नारी शिक्षा आदि के लिए प्रयास आरम्भ किये। उन्नीसवीं सदीं के पूर्वार्द्ध में भारत के कुछ समाजसेवियों जैसे राजाराम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द विद्यासागर तथा केशवचन्द्र सेन ने अत्याचारी सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध आवाज उठायी। इन्होंने तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के समक्ष स्त्री पुरूष समानता, स्त्री शिक्षा, सती प्रथा पर रोक तथा बहु विवाह पर रोक की आवाज उठायी।

**नारी को अबला समझ, मत कर भारी भूल।**

**नारी इस संसार में, जीवन का है मूल।।**

इक्कीसवीं सदी तक आते - आते पुनः । महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ और महिलाओं ने शैक्षिक, राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक, खेलकूद आदि विविध क्षेत्रों में उपलब्धियों के नए आयाम तय किये। आज महिलाएँ आत्मनिर्भर, स्वनिर्मित, आत्मविश्वासी हैं, जिसने पुरूष प्रधान चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी अपनी योग्यता प्रदर्शित की है। वह केवल शिक्षिका, नर्स, स्त्री रोग की डाक्टर न बनकर इंजीनियर, पायलट, वैज्ञानिक, तकनीशियन, सेना, पत्रकारिता जैसे नए क्षेत्रों को अपना रही है। राजनीति के क्षेत्रों में महिलाओं ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

**उपसंहार**

एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की उपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्यों लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है । शिक्षा ही वह कुंजी है जो जीवन के वह सभी द्वार खोल देती है जो कि आवश्यक रूप से सामाजिक है । शिक्षित महिलाओं को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होने में बहुत मदद मिली । महिलाएीं अपनी स्थिति व अपने अधिकारों के विषय में सचेत होने लगी । शिक्षा ने उन्हें

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पुरूष के साथ समानता के अधिकारों की मीग करने को प्रेरित किया ।

भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन तो की जा रहीं हैं लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर तक उचित ढंग से न पहुँच सकने के कारण स्त्रियों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है। यह सत्य है कि वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए हैं, लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरुष - प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है। इस सन्दर्भ में युगनायक एवं राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनीय है - " किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए, जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। हमें नारीशक्ति के उद्धारक नहीं, वरन् उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए। भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भाँति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं।

दूसरे विकासशील देशों की तुलना में हमारे देश में महिलाओं की स्थिति काफी बेहतर है। यद्यपि हम यह तो नहीं कह सकते कि महिलाओं के हालात पूरी तरह बदल गए है पर पहले की तुलना में इस क्षेत्र में बहुत तरक्की हुई है। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति पहले से अधिक सचेत है। महिलाएं अब अपनी पेशेवर जिंदगी ( सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक ) को लेकर बहुत अधिक जागरूक है जिससे वे अपने परिवार तथा रोजमर्रा की दिनचर्या से संबंधित खर्चों का निर्वाह आसानी से कर सके।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

## संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. मैथिली शरण गुप्त, साकेत, पंचवटी मनुस्मृति, सं . पंडित रामेश्वर भट्ट, अध्याय-3, श्लोक-56, निर्णय सागर प्रेस मुंबई, सन्-1922, पृष्ठ: 54
2. कबीर, सं . हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई, सन्-1942, पृष्ठ: 243
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी, जायसी और उनका पद्मावत, पद्मावती नागमती सत्ती खंड, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, सन्-1959 पृष्ठ: 813
4. डॉ . उषा पांडे, मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में नारी भावना ( शोध प्रबंध ), हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, सन्-1989
5. सूरदास, सूरसागर प्रथम खंड, सं . नंददुलारे वाजपेयी, नवम स्कंध, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, पृष्ठ: 180
6. सुभद्रा कुमारी चौहान, विजयादशमी, वेबसाइट https://www.bharatdarshan.co.nz/index-amp.html
7. बल्लभ दास तिवारी, हिंदी काव्य में नारी ( शोध प्रबंध ), कांता प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा, सन्-1974 पृष्ठ: 634
8. रघुवीर शरण मित्र, भूमिजा, अरण्य रोदन, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, सन्-1961, पृष्ठ: 22